– Save This Page as a PDF–

राजा मसीहा का प्रमाणीकरण



आश्चर्यकर्मों को बाइबल के पूरे इतिहास में देखा गया
है, परन्तु उनका सबसे बड़ा प्रदर्शन मसीह की सेवकाई के दौरान प्रकट हुआ। उन चमत्कारों ने छह रणनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति की:

१. एक नए युग की शुरुआत करना। पहला उद्देश्य भविष्यद्वाणी किए गए मसीहा का परिचय देना था, जिसने बदले में परमेश्वर के राज्य के निकट आने की घोषणा की। पश्चाताप करो और सुसमाचार पर विश्वास करो (मरकुस १:१५)। आश्चर्यकर्म राज्य के प्रस्ताव के साथ हुए और उस प्रस्ताव की पुष्टि की (मत्ती १२:२८)।

२. उसके मसीहा होने को प्रमाणित करना। दूसरा प्रमुख उद्देश्य मसीह के मसीहात्व को प्रमाणित करना था। उसके कार्य मसीहा और परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसके व्यक्तित्व की गवाही देते हैं (यूहन्ना २०:२०-३१)। वे उसके ईश्वरत्व और मसीहात्व के प्रतीक हैं।

३. उनके संदेश को प्रमाणित करना। जिस तरह चमत्कारों को मसीहा के व्यक्तित्व को प्रमाणित करने के लिए इस्तेमाल किया गया था, उन्होंने उसके संदेश को प्रमाणित करने के लिए भी काम किया। मसीह ने यूहन्ना १०:३८ में अपने चमत्कारों की घोसना पिता के साथ अपनी एकता के बारे में अपने संदेश को प्रमाणित करने के लिए की। उनके संदेश को उनके द्वारा किए गए चमत्कारों द्वारा प्रामाणिक प्रमाणित किया गया था।

४. उनके तालीमिदिम को निर्देश देना। महान महासभा द्वारा मेशियाच की अस्वीकृति के बाद (मत्तीहू १२:२४; मरकुस ३:२२; लूका ११:१५-१६; यूहन्ना ७:२०), उसके चमत्कार अब सार्वजनिक नहीं थे और उसके लाभ के लिए निर्देश के एजेंट बन गए प्रेरितों

Bn – राजा मसीहा का प्रमाणीकरण | 2

(देखें En – मसीह की सेवकाई में चार कठोर परिवर्तन)। चमत्कारों ने उन्हें मसीहा की शक्ति (मरकुस ४:३९-४१, ५:१-२०), यीशु के प्रावधान में भरोसा (यूहन्ना ६:३-६), प्रार्थना (मरकुस ६:४६, लूका ५:१६), और अन्यजातियों तक पहुँचना (मत्ती १५:२१-३८)।

५. भविष्य के राज्य में स्थितियों को प्रकट करने के लिए। एक विशेष उद्देश्य जिसके लिए मसीह ने अपने चमत्कारों का उपयोग किया था, भविष्य के मसीहाई साम्राज्य की स्थितियों को प्रकट करना था। चमत्कार संक्षिप्त रूप में साम्राज्य में, बीमारी (यूहन्ना ५:१-८), मृत्यु (यूहन्ना ११:१७-४४), रोग (लूका १४:१-६), और भूख (मत्तीयाहू १५:३२-३८) के दूर होने को दर्शाता है। आश्चर्यकर्म उस आनंद और समृद्धि की ओर भी इशारा करते हैं जो राज्य की विशेषता होगी (यूहन्ना २:११) और यह कि सहस्राब्दी युग में, शैतान को प्रतिबंधित किया जाएगा (मत्ती ८:२८-३४)।

६. दया प्रदर्शित करना। मसीहा के चमत्कारों का एक अंतिम उद्देश्य पीड़ित मानवता पर दया प्रदर्शित करना था। उसकी दया और करुणा ने अक्सर उसे कार्य करने के लिए प्रेरित किया (मत्तीयाहू १४:१४, 15:32; मरकुस १:४१; लूका ७:३)। वह अक्सर दया की याचना के जवाब में चंगा करता था (मत्ती १५:२५, १७:१५; मरकुस १०:४७-४८; लूका १७:१३)। मसीह के चंगाई के चमत्कार उसके अन्य सभी चमत्कारों से अधिक हैं।

मसीहा के चमत्कारों के अलग-अलग परिणाम थे: विश्वास (यूहन्ना २:११, ४:५०), दृढ़ विश्वास (लूका ५:८), शिष्यता (मरकुस १०:५२), भावना (मत्तीहु ८:२७, १२:२३; मरकुस ७: ३७), आराधना (मरकुस २:१२; यूहन्ना ९:३८), मसीह की विशिष्टता की पहचान (लूका ७:१६; यूहन्ना ६:१४), और अस्वीकृति (मत्ती १२:२४; यूहन्ना ५:१६, ११:५३)।